अनुभूति
(राजभाषा गृह पत्रिका)
वर्ष 2025
तेल उद्योग विकास बोर्ड
(पेट्रोलियम एवं प्राकृतिक गैस मंत्रालय)

**संरक्षक**

**श्रीमती वर्षा सिन्हा**
(सचिव, तेल उद्योग विकास बोर्ड
एवं अध्यक्ष,
राजभाषा कार्यान्वयन समिति)

**संपादक मंडल**

**श्री समीर कुमार मोहन्ती**
(वित्त सलाहकार एवं मुख्य लेखा अधिकारी)

**श्री राजेश सैनी**
(उप मुख्य वित्त एवं लेखा अधिकारी)

**श्री विकास श्रीवास्तव**
(उप मुख्य वित्त एवं लेखा अधिकारी)

**संपादक**

**श्रीमती ज्योति शर्मा**
(हिन्दी अधिकारी)

**संपादन सहयोग**

श्री महेन्द्र प्रताप सिंह (डीओ)

**"अनुभूति" पत्रिका प्रतिवर्ष तेल उद्योग विकास बोर्ड (तेउविबो), प्लॉट सं**0.2, **सेक्टर** 73, **नोएडा से प्रकाशित की जाती है। पत्रिका में प्रकाशित लेखों में लेखकों के कथनों और मतों के लिए बोर्ड उत्तरदायी नहीं है।**

## संपादकीय

राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा निर्धारित नीति एवं समय-समय पर जारी दिशा-निर्देशों का पालन करना हम सभी का नैतिक ही नहीं, अपितु संवैधानिक उत्तरदायित्व भी है। इसी क्रम में राजभाषा हिन्दी के प्रचार-प्रसार हेतु तेल उद्योग विकास बोर्ड निरंतर प्रयासरत है, और उन्हीं प्रयासों में से एक है – राजभाषा गृह पत्रिका "अनुभूति" का प्रकाशन । इस पत्रिका के माध्यम से तेल उद्योग विकास बोर्ड में कार्यरत कार्मिकों को अपने विचारों को प्रकट करने और अनुभवों के आदान-प्रदान करने का अवसर प्राप्त होता है।

राजभाषा गृह पत्रिका "अनुभूति" का 21वां अंक आप सबके समक्ष रखते हेतु अत्यंत हर्ष का अनुभव हो रहा है। तेल उद्योग विकास बोर्ड अपने उद्देश्य एवं लक्ष्यों को पूरा करने के साथ-साथ राजभाषा हिन्दी के प्रयोग को बढ़ावा देने के लिए विशिष्ट भूमिका निभा रहा है। 'अनुभूति' पत्रिका के इस अंक में कार्मिकों ने कविताओं, कहानियों और लेखों के माध्यम से अपने अनुभव, भावनाएं व्यक्त की हैं।
तेल उद्योग विकास बोर्ड के सभी कार्मिक हिन्दी कार्यान्वयन को नई दिशा एवं गति प्रदान करने के लिए सदैव तत्पर रहते हैं और पत्रिका के इस अंक में सभी ने अपना सहयोग दिया है। अनुभूति पत्रिका में प्रकाशित ज्ञानवर्द्धक एवं सुरूचिपूर्ण लेखन सामग्री देने के लिए प्रबुद्ध लेखकों का विशेष आभार।

"अनुभूति" की संपादकीय टीम सभी रचनाकारों का हृदय से आभार प्रकट करती है, जिनकी उत्कृष्ट लेखनी से यह अंक सुसज्जित हुआ है। हमें विश्वास है कि यह अंक न केवल पठनीय होगा, बल्कि प्रेरणास्रोत भी सिद्ध होगा।

आशा है अनुभूति का यह अंक आप सभी को पसंद आएगा।

# विषय सूची


| क्र.सं. | विषय | पृष्ठ संख्या |
|---|---|---|
| | लेख- | **8-25** |
| | • ओआईडीबी का स्वर्ण जयंती समारोह - वर्षा सिन्हा | 8-11 |
| | • राजभाषा हिन्दी - गणेश साह | 12 |
| | • हिन्दी साहित्य में लोकधर्मी परम्परा - महेन्द्र प्रताप | 12-16 |
| | • आत्म विश्वास - विकास किशोर सक्सेना | 17-18 |
| | • देवभूमि ऋषिकेश - रेनू बलोनी | 19-21 |
| | • भारत मंडपम- वन्दना वर्मा | 22 |
| | • स्वच्छता ही सेवा अभियान - मेहरबान सिंह चौहान | 23-25 |
| | कविताएं- | **26-32** |
| | 1. एक पेड़ माँ के नाम - सुशील कुमार | 26 |
| | 2. मेरा पहला प्यार - सोनाली शर्मा | 27 |
| | 3. कभी हम भी बहुत अमीर हुआ करते थे - मेहरबान सिंह चौहान | 28-29 |
| | 4. बंधन तोड़ कर देखो - वन्दना वर्मा | 30 |
| | 5. दिल को छू लेने वाली बात - राजेन्द्र सिंह | 31 |
| | 6. कोशिश होनी चाहिए - विकास किशोर सक्सेना | 32 |
| | राजभाषा गतिविधियां – एक झलक | **33-36** |
| | • राजभाषा निरीक्षण | 33 |
| | • हिन्दी कार्यशालाएं | 35-36 |
| | • विश्व हिन्दी दिवस | 34 |
| | • हिन्दी पखवाडा | 34 |
| | अन्य गतिविधियां - एक झलक | **37-40** |
| | • विश्व पर्यावरण दिवस | **37** |
| | • अग्निशमन प्रशिक्षण | **37** |
| | • पर्यावरण जागरूकता रैली | **38** |
| | • स्वच्छता अभियान | **38** |
| | • योग दिवस | **39** |
| | • स्वास्थ्य जांच शिविर | **39** |
| | • रक्त दान शिविर | **40** |
| | • एक पेड़ मां के नाम | **41** |
| | • जरा हंस लें | |

# राजभाषा प्रतिज्ञा

भारतीय संविधान के अनुच्छेद 343 और 351 तथा राजभाषा संकल्प 1968 के आलोक में हम, केंद्र सरकार के कार्मिक यह प्रतिज्ञा करते हैं कि अपने उदाहरणमय नेतृत्व और निरंतर निगरानी से; अपनी प्रतिबद्धता और प्रयासों से; प्रशिक्षण और प्राइज़ से अपने साथियों में राजभाषा प्रेम की ज्योति जलायें रखेंगे, उन्हें प्रेरित और प्रोत्साहित करेंगे; अपने अधीनस्थ के हितों का ध्यान रखते हुए; अपने प्रबंधन को और अधिक कुशल और प्रभावशाली बनाते हुए राजभाषा हिंदी का प्रयोग, प्रचार और प्रसार बढ़ाएंगे। हम राजभाषा के संवर्धन के प्रति सदैव ऊर्जावान और निरंतर प्रयासरत रहेंगे।

**जय राजभाषा! जय हिन्दी !**

## सचिव की कलम से

प्रसन्नता का विषय है कि तेल उद्योग विकास बोर्ड राजभाषा हिंदी की उन्नति एवं विकास हेतु निरंतर प्रतिबद्ध एवं सक्रिय रूप से कार्यरत है। हमारे समर्पित कार्मिकों के निष्ठा एवं सतत प्रयासों के परिणामस्वरूप, कार्यालय को राजभाषा कार्यान्वयन के क्षेत्र में राष्ट्रीय स्तर पर अनेक प्रतिष्ठित पुरस्कारों से सम्मानित किया गया है।

हम प्रत्येक स्तर पर हिंदी के प्रयोग को प्रोत्साहित करने एवं उसे कार्य की भाषा के रूप में स्थापित करने हेतु प्रतिबद्ध हैं। यह केवल एक भाषिक प्रयास नहीं, बल्कि राष्ट्रीय एकता, पारस्परिक सद्भाव और सौहार्द को सुदृढ़ करने का माध्यम भी है। हमारे देश में हिंदी ही वह भाषा है, जो सांस्कृतिक चेतना की वाहक और एकता की आधारशिला के रूप में कार्य कर रही है। हिंदी में कार्य करना न केवल हमारी संस्कृति से जुड़ने का माध्यम है, बल्कि यह हम सभी का संवैधानिक कर्तव्य भी है। राजभाषा हिंदी के प्रति लगाव एवं रुचि को बनाए रखने के लिए बोर्ड में समय-समय पर विभिन्न प्रेरणादायक कार्यक्रमों का आयोजन किया जाता है। साथ ही, कार्मिकों की रचनात्मक प्रतिभा को मंच प्रदान करने के उद्देश्य से, बोर्ड प्रतिवर्ष अपनी गृह पत्रिका "अनुभूति" का प्रकाशन करता है। यह पत्रिका हमारे कार्मिकों को अपने विचारों को अभिव्यक्त करने, सृजनात्मकता को निखारने तथा भाषा के प्रति भावनात्मक जुड़ाव को प्रोत्साहित करने का एक सशक्त माध्यम है।

मुझे पूर्ण विश्वास है कि हम सभी इसी भावना के साथ राजभाषा हिंदी के प्रति अपने दायित्वों का निष्ठा पूर्वक निर्वहन करते हुए नई उपलब्धियों की ओर अग्रसर रहेंगे।

"अनुभूति" के इस नवीनतम अंक के प्रकाशन हेतु मैं आप सभी को हार्दिक शुभकामनाएं एवं बधाई देती हूँ।

**वर्षा सिन्हा**

सचिव, तेल उद्योग विकास बोर्ड/

अध्यक्ष,राजभाषा कार्यान्वयन समिति

# राजभाषा कीर्ति पुरस्कार

राजभाषा नीति की श्रेष्ठ कार्यान्वयन के लिए राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय द्वारा तेल उद्योग विकास बोर्ड को वर्ष 23–24 के दौरान राजभाषा कीर्ति पुरस्कार हेतु बोर्ड/ संस्थानों आदि की श्रेणी के अंतर्गत "क" क्षेत्र में तृतीय पुरस्कार से सम्मानित किया गया हिन्दी दिवस के अवसर पर भारत मण्डपम्, नई दिल्ली में 14 सितम्बर 2024 को आयोजित चतुर्थ अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन के दौरान सचिव, ओआईडीबी ने यह प्रतिष्ठित पुरस्कार माननीय राज्य सभा सदस्य श्री सुधांशू त्रिवेदी, श्री हरिवंश नारायण सिंह, उप सभापति राज्यसभा, डॉ. मनसुख एल. मांडविया, श्रम एवं रोजगार एवं खेल मंत्री तथा गृह राज्य मंत्री श्री अजय कुमार मिश्रा के कर कमलों से ग्रहण किया और कार्यालय के सभी अधिकारियों/कर्मचारियों को पुरस्कार का श्रेय देते हुए शील्ड उन्हें सौंप दी।

# ओआईडीबी@ स्वर्णिम वर्ष : 2024

तेल उद्योग विकास बोर्ड (OIDB) वर्ष 1975 से अनुसंधान एवं विकास परियोजनाओं से लेकर राष्ट्रीय महत्व के रणनीतिक पेट्रोलियम भंडारों तक को वित्तीय सहायता प्रदान कर "सतत ऊर्जा # स्वच्छ ऊर्जा" मिशन के अंतर्गत उन्हें सशक्त करता आ रहा है। वर्तमान में बोर्ड के पास लगभग ₹12,185 करोड़ की कुल पूंजी (Corpus) उपलब्ध है। बोर्ड ने आज तक तेल उद्योग में अनुसंधान एवं विकास के लिए कुल -- करोड़ रुपये की ऋण सहायता, 5896.02 करोड़ रुपये का अनुदान, तथा 3812.57करोड़ रुपये की इक्विटी के रूप में निवेश किए हैं।

भारत की ऊर्जा सुरक्षा और स्थिरता सुनिश्चित करने में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हुए तेल उद्योग विकास बोर्ड ने अपने 50 वर्षों की यात्रा पूर्ण कर 13 जनवरी 2025 को स्वर्ण जयंती समारोह का आयोजन किया। इस ऐतिहासिक अवसर पर माननीय पेट्रोलियम एवं प्राकृतिक गैस मंत्री श्री हरदीप सिंह पुरी तथा मंत्रालय के सचिव श्री पंकज जैन ने कार्यक्रम का शुभारंभकर इस स्वर्णिम यात्रा को यादगार बनाया।

इस कार्यक्रम में पेट्रोलियम मंत्रालय के वरिष्ठ अधिकारियों सहित अन्य गणमान्य व्यक्तियों ने भी सहभागिता की।

इस अवसर पर माननीय मंत्री महोदय ने अपने संबोधन में कहा कि ओआईडीबी (तेल उद्योग विकास बोर्ड) पिछले 50 वर्षों से भारत के ऊर्जा क्षेत्र की मजबूत आधारशिला के रूप में कार्य कर रहा है। इस संस्थान ने भारत को एक कम-कार्बन उत्सर्जन वाली अर्थव्यवस्था में परिवर्तित करने तथा माननीय प्रधानमंत्री जी के कुशल नेतृत्व में जलवायु परिवर्तन से निपटने की वैश्विक प्रतिबद्धताओं के अनुरूप कार्य करने के लिए कई महत्वपूर्ण पहलुओं पर सहयोग दिया है। जिसमें संपीड़ित बायोगैस, हरित हाइड्रोजन, कौशल विकास, स्वदेशी क्षमताओं का सुदृढ़ीकरण तथा उन्नत जैव ईंधनों को बढ़ावा देने जैसी योजनाएं सम्मिलित हैं। ओआईडीबी ने कुछ उल्लेखनीय अनुसंधान एवं विकास (R&D) गतिविधियों का वित्तपोषण किया है और साथ ही, आईएसपीआरएल के माध्यम से रणनीतिक पेट्रोलियम भंडारों की स्थापना कर भारत के ऊर्जा भविष्य को सुरक्षित एवं सशक्त बनाया है।

इस स्वर्ण जयंती समारोह के अवसर पर ओआईडीबी द्वारा वित्तपोषित राष्ट्रीय स्तर की कई महत्वपूर्ण परियोजनाओं को माननीय मंत्री महोदय द्वारा शील्ड प्रदान कर उन्हें सम्मानित भी किया ।

भविष्य की ऊर्जा आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए "सतत ऊर्जा" और "स्वच्छ ऊर्जा" विषय पर एक तकनीकी सत्र का आयोजन किया गया। इस सत्र में विशेषज्ञों के बीच *"ऊर्जा सुरक्षा और सुगम ऊर्जा संक्रमण के साथ तेल क्षेत्र में प्रतिभाओं को बनाए रखने की चुनौतियाँ एवं उनके समाधान"* विषय पर एक वार्ता भी आयोजित की गई।

श्री स्मिथ संगियाम्बुत, पार्टनर - बीसीजी, ने "कच्चे तेल की सोर्सिंग: रणनीति और वर्तमान नई प्रवृत्तियाँ" विषय पर प्रकाश डाला। ह्यूस्टन विश्वविद्यालय के प्रोफेसर रामनन कृष्णमूर्ति ने "ऊर्जा वैक्टर में नवाचार तथा संवहनीय डाउनस्ट्रीम प्रसंस्करण" पर तथा सुश्री जयंती घोष, कार्यकारी निदेशक - ईआईएल, ने "संवहनीय डाउनस्ट्रीम प्रसंस्करण: अवसर और चुनौतियाँ" विषय पर अपने विचार प्रस्तुत किए। इस संवादात्मक मंच में तेल एवं ऊर्जा क्षेत्र के वरिष्ठ दिग्गज वक्ताओं ने भाग लेकर अपने अनुभव और विचार साझा किए। उन्होंने तेजी से बदलते वैश्विक ऊर्जा परिदृश्य, हरित ऊर्जा की दिशा में हो रहे प्रयासों, तथा ऊर्जा क्षेत्र में मानव संसाधन को सुदृढ़ बनाए रखने के लिए आवश्यक रणनीतियों पर विस्तृत चर्चा की।

तेल उद्योग विकास बोर्ड ने 13 जनवरी 2024 को संस्थापक दिवस से शुरुआत करते हुए, 13 जनवरी 2025 तक अपनी 50 वर्षों की यात्रा पूर्ण होने के उपलक्ष्य में स्वर्ण जयंती वर्ष को यादगार बनाने हेतु विभिन्न कार्यक्रमों की श्रृंखला का आयोजन किया। इस अवसर पर ओआईडीबी ने अपने कर्मिको के साथ–साथ अनुदान प्राप्त संस्थानों के कार्मिकों को भी सम्मिलित करते हुए, संस्थान की 50 वर्षों की उपलब्धियों और योगदान को प्रदर्शित करने के लिए कई विविध कार्यक्रमों जैसे– वित्तीय संगोष्ठी, स्वास्थय शिविर, रक्तदान शिविर, योग दिवस, तनाव प्रबंधन, खेल दिवस, आदि का आयोजन किया। इन आयोजनों का उद्देश्य कर्मचारियों में नवीन ऊर्जा, उत्साह और समर्पण का संचार करना था, जिससे वे संस्था के मूल्यों और उद्देश्यों के प्रति और भी अधिक प्रेरित होकर कार्य कर सके।

यह दिन न केवल तेल उद्योग विकास बोर्ड की 50 वर्षों की गौरवशाली यात्रा को संजोने का अवसर था, बल्कि आने वाले समय के लिए हमारे लक्ष्यों एवं योजनाओं को साकार करने की दिशा में संकल्प लेने का भी दिन था। यह मेरे लिए अत्यंत गर्व और प्रसन्नता का विषय है कि मेरे कार्यकाल में इस स्वर्णिम वर्ष का सफलतापूर्वक आयोजन हुआ। मैं आशा करती हूँ कि हम सभी अपने प्रयासों से आने वाले वर्षों में बोर्ड को और भी नई ऊँचाइयों तक पहुँचाने में सक्षम होंगे।

"50 वर्ष पूरे हुए, अभी आगे बहुत है जाना
अपनी लग्न और मेहनत से, नए आयाम है बनाना"

**वर्षा सिन्हा (सचिव, ओआईडीबी)**

# राजभाषा हिन्दी

भारत की स्वतंत्रता के बाद 14 सितम्बर 1949 को संविधान सभा ने एकमत से यह निर्णय लिया कि हिन्दी भारत की राजभाषा होगी। इस महत्वपूर्ण निर्णय के महत्व को प्रतिपादित करने तथा हिन्दी को हर क्षेत्र में प्रसारित करने के लिए राष्ट्रभाषा प्रचार समिति के अनुरोध पर 1953 से संपूर्ण भारत में प्रतिवर्ष 14 सितम्बर को हिन्दी दिवस के रूप में मनाया जाता है।

धीरे-धीरे हिन्दी भाषा का प्रचलन बढ़ा और इस भाषा ने राष्ट्रभाषा का रूप ले लिया। हिन्दी भाषा अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भी बहुत पसंद की जाती है। इसका एक कारण यह है कि हमारी भाषा हमारे देश की संस्कृति और संस्कारों का प्रतिबिंब है। यही वजह है कि आज विश्व के कोने-कोने से विद्यार्थी हमारी भाषा और संस्कृति को जानने के लिए हमारे देश का रूख कर रहे है। हम सभी को हिन्दी का सम्मान करना चाहिए। हिन्दी हिन्दुस्तान की भाषा है। राष्ट्रभाषा हमारी पहचान है। हिन्दी हमारी गौरव है और यह हम सभी को एक सूत्र में बाधे रखती है। साक्षर से निरक्षर तक प्रत्येक वर्ग का व्यक्ति हिन्दी भाषा को आसानी से बोल समक्ष लेता है। हिन्दी भाषा का प्रयोग करके लोग बहुत सरलता से अपने विचारों को प्रकट कर लेते है और इस प्रकार से इस भाषा का प्रभाव क्षेत्र और इस प्रकार से इस भाषा का प्रभाव क्षेत्र और विस्तृत हो कर पूरे राष्ट्र में फैल जाता है।

इसके प्रचार-प्रसार के उद्देश्य से हिन्दी दिवस के उपलक्ष्य में कई कार्यक्रम आयोजित किए जाते हैं। जिसमें हिन्दी निबंध लेखन, हिन्दी कविता पाठ, हिन्दी दोहा गायन और हिन्दी भाषा शब्द ज्ञान प्रमुख्य है। इस अवसर पर प्रतिभागियों को पुरस्कृत भी किया जाता है। आज हिन्दी भाषा का बड़े पैमाने पर सरकारी काम-काज में प्रयोग हो रहा है तथा दिनों-दिन हिन्दी लेखन का प्रयोग सरकारी और राज्य सरकारों के कार्यालय में बढ़ रहा है। आज हिन्दी भाषा भारत की सामासिक संस्कृति के सभी तत्वों की अभिव्यक्ति का माध्यम बन चुका है। यह विश्व में तीसरी सबसे ज्यादा बोली जाने वाली भाषा है। यह भाषा हमारे पारम्परिक ज्ञान, प्राचीन सभ्यता और आधुनिक प्रगति के बीच एक सेतु है।

आज वैश्वीकरण के दौर में हिन्दी विश्व स्तर पर एक प्रभावशाली भाषा बनकर उभरी है। ज्ञान-विज्ञान की पुस्तकें बड़े पैमाने पर हिन्दी में लिखी जा रही है। संचार माध्यमों में हिन्दी का प्रयोग निरंतर बढ़ रहा है। हिन्दी भाषा के प्रसार से पूरे देश में एकता की भावना और मजबूत हो रही है। सरकार द्वारा हिन्दी में अच्छे कार्य के लिए 'राजभाषा कीर्ति पुरस्कार योजना' के अंतर्गत शील्ड प्रदान की जा रही है। इसके अलावा हिन्दी में लेखन के लिए राजभाषा गौरव पुरस्कार भी दिया जाता है। राजभाषा विभाग प्रति वर्ष देश के अलग–अलग राज्यों में हिन्दी दिवस के अवसर पर

अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन का आयोजन करता है। राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय के स्वर्णिम 50 वर्ष पूरे होने के उपलक्ष्य में राजभाषा विभाग स्वर्ण जयंती समारोह का आयोजन कर राजभाषा का प्रयोग बढ़ाने हेतु अनेक कार्यक्रमों एवं विभिन्न प्रतियोगिताओं का आयोजन कर रहा है। सरकार अपने प्रयासों से राजभाषा हिन्दी के प्रयोग को बढ़ाने का प्रयास कर रही है। हमें भी अपना कार्यालयी काम हिन्दी में करके अपना संवैधानिक कर्तव्य निभाना कर हिन्दी को विश्व स्तर पर ले जाना है।

जन-जन की आशा है हिन्दी, भारत की भाषा है हिन्दी।
आओ हिन्दी का सम्मान करें, दुनिया-भर में नाम करें।

**गणेश साह**
**लेखा अधिकारी**

# हिन्दी साहित्य में लोकधर्मी परम्परा

साहित्य और खासतौर पर कविता की शक्ति ही इसी में है कि वह पाठक को भी उस समस्या के प्रति सजग और संवेदनशील बना देती है जिसे हम देखते तो हैं, लेकिन जिसका गहन प्रेक्षण नहीं कर पाते। हिन्दी साहित्य में यदि लोकधर्मी परम्परा को अगर हम बिल्कुल आदिकाल से देखना प्रारम्भ करें तो अनेक कवियों के नाम सामने आते हैं। अब्दुल रहमान लिखित सन्देश रासक हो या नरपति नाल्ह का बीसलदेव रासो – इन विरह काव्यों में नायिकाओं की आकुलता और विदग्धता जब एक साथ मुखरित होती है तो इसमें लोकधर्मिता का समावेश दिखाई पड़ता है, यथा- जिन अंगिहिं तू बिलसिया, ते दग्धा विरहेण। यह सारे बारहमासा वर्णन ऐसे हैं जिनमें लोक के तत्व, हवाएँ, मौसम और जीवनशैली साफ-साफ दिखाई देती है।

इसी तरह विद्यापति आदिकाल के लौकिक काव्य के रचनाकार हैं। उन्हें हिन्दी में कृष्ण भक्ति काव्य का पहला रचयिता माना जाता है और इसी वजह से उनके यहाँ लोक के रस मौजूद हैं। भाषा के आधार पर उनकी कृतियाँ देखें, तो उन्होंने संस्कृत और अपभ्रंश में तो खूब लिखा ही है, लेकिन उनके यश का आधार लोक को केन्द्र में लेकर चलने वाली पदावली ही है। यह पदावली उन्होंने देशभाषा मैथिली में लिखी है। इसे लोकधर्मी परम्परा के साक्ष्य के रूप में ग्रहण किया जा सकता है कि विद्यापति स्वयं लिखते हैं – सक्कय बाणी बुहजण भावइ। पाउअं रस को मम्म न पावइ। देसिल बअणा सभ जण मिट्ठा। कीर्तिलता में अपनी भाषा को विद्यापति ने देसिल बअणा नाम दिया है।

ढोला मारू रा दूहा एक ऐसा लोककाव्य है जिसमें सयानी होने पर मारू जी अपने बचपन के पति ढोला की चर्चा सुनती है और अपने पति का पता लगाने के लिए कई सन्देशवाहक भेजती है लेकिन

कोई वापस लौटकर नहीं आता। अन्त में मारवाड़ी लोकगीतों के गायक ढाढी को यह जिम्मेदारी सौंपी जाती है और उसे इस काम में सफलता मिलती है। अमीर खुसरो ने सैकड़ों पुस्तकें लिखीं लेकिन आज जो 20-22 ग्रन्थ उनके उपलब्ध हैं, उनमें उनकी लोकधर्मिता, विनोदप्रियता और गहरी प्रेक्षण क्षमता स्पष्ट रूप से परिलक्षित होती है। इनकी कुछ पहेलियाँ, मुकरियाँ और फुटकर गीत आज भी लोक में सुनने को मिल जाते हैं –

इनकी एक बहुत ही लोकप्रिय पहेली इस प्रकार है– एक थाल मोती से भरा, सबके सिर पर औंधा धरा। चारों ओर वह थाल फिरे, मोती उससे एक न गिरे। (आकाश)

उनके दो सुखने देखिए – पान क्यों सड़ा? घोड़ा क्यों अड़ा? (फेरा न था।)

इस कड़ी में अमीर खुसरो ने साहित्य के लिए लोकधर्म के एक नवीन मार्ग का अन्वेषण किया। इन्होंने जीवन को संग्राम की कठोर श्रृंखला से मुक्त करके आनन्द और विनोद के स्वच्छन्द वातावरण में विहार करने की स्वतन्त्रता देना। इनकी लोकधर्मिता सिर्फ हिन्दू मुस्लिम एकता की ही परिचायक नहीं है, बल्कि यहाँ भाषिक एकता भी देखने को मिलती है – जे हाल मिसकीं मकुन तगाफुल दुराय नैना बनाय बतियाँ जैसे पद इस बात के उदाहरण हैं। -

कविता में खुसरो की लोकधर्मिता लिखने तक ही सीमित नहीं थी। वह गवैये भी थे। ध्रुवपद के स्थान पर कौल या कव्वाली बनाकर इन्होंने बहुत सारे नए राग निकाले थे, जो व्यापक लोक में अब तक प्रचलित हैं। नए वाद्ययन्त्र सितार की रचना करके इन्होंने अपने संगीतज्ञ होने का परिचय दिया और सबसे बढ़कर यह कि इस संगीत का सहज झुकाव ही लोक यानी व्यापक जन की तरफ था। बोलचाल की भाषा में अपनी बात कहकर उक्ति-वैचित्र्य का सहज प्रदर्शन करने वाले खुसरो हिन्दी साहित्य की लोकधर्मी परम्परा के प्रवर्तकों में से एक हैं।

कबीर की लोकधर्मिता आकुलता भरी और जिज्ञासामूलक है। वे लोकधर्मिता का महज प्रेक्षण ही नहीं करते, बल्कि उस पर बेहतर समाज की रचना के लिए प्रश्न भी खड़े कर देते हैं – चलन-चलन सब लोग कहत हैं, न जानो बैकुण्ठ कहाँ है? या फिर, न जाने तेरा साहब कैसा है? लोक के विपथ होने पर, लोक में व्यतिक्रम होने पर कबीर लोकभाषा में न सिर्फ यह कहते हैं कि बरसय कम्बल भीजै पानी, बल्कि गंगा स्नान को जाती स्त्रियों को देखकर जो उन्होंने कहा है, हाँ कहा ही है क्योंकि मसि कागद छुयौ नहीं, कलम गही नहिं हाथ, वह बहुत चर्चित भी है, चिन्तनीय भी और विचारणीय भी।

अपनी भक्ति को लोकधर्म से कैसे जोड़ा है, यहाँ दृष्टव्य है, यथा- हरिजननी मैं बालक तोरा, काहे न अवगुण बकसहु मोरा। हरि मोरा पिउ मैं हरि की बहुरिया। या फिर, दुलहिन गावहु मंगलचार, हम घरि आये हो राजा राम भरतार। ये जो दुलहिन है, बहुरिया है, भरतार है यह लोक और लोकधर्मिता से, लोकपरम्परा और लोकजीवन के मूल में विद्यमान है। पर कबीर की महानता सिर्फ जोड़ने तक ही सीमित नहीं है, वे इस लोक से टकराते भी हैं – जे तू बाभन बभनी जाया, आन बाट हवै क्यों नहिं आया!

कबीर ने अपने पदों में जो सादृश्य विधान खड़े किए हैं, अगर हम उन विधानों पर गौर करें तो पाते हैं कि वे लोक में, बल्कि कहना चाहिए कि बहुजन में व्याप्त व्यवसायों, जो कि व्यापक लोक के जीवनयापन और परिवार चलाने का आधार है, उन्हीं व्यवसायों का बारम्बार उल्लेख किया है – जैसे, चलती चाकी देखकर दिया कबीरा रोय, दो पाटन के बीच में साबुत बचा न कोय। यहाँ चाकी का इस्तेमान गौर करने लायक है। जुलाहा, माली, कुम्हार, लोहार, व्याध यानी शिकारी और कलवार आदि के लोकव्यापी व्यवसायों का उपयोग वे प्रायः अपनी अलंकार योजना में करते हैं ताकि उनकी बात उस लोक में पहुँच सके जहाँ तमाम लोक-कुरीतियाँ, आडम्बर के रूप में व्याप्त लोकाचार और लोक-विसंगतियाँ स्वयं लोक का ही बंटाधार कर रही हैं। असल में यह लोकधर्मिता को सुदृढ़ करने की कोशिश है – घर में गंगा, घर में जमुना, वहीं द्वारिका कासी। घर बस्तू बाहर क्यों ढूँढ़े, बन-बन फिरा उदासी। और लोक में तो विभाजनकारी वृत्तियाँ हैं उन पर कबीर की निगाह देखिए – संतौ धोखा कासूँ कहिए। गुनमैं निरगुन, निरगुनमैं गुन, बाट-छाँड़ि क्यों रहिए? तात्पर्य यह है कि कबीर की लोकधर्मिता साझी है, वह सबकी है, अमीर की है, गरीब की है, हमारी है, आपकी है।

तुलसीदास ने लोकधर्मिता का आदर्श ही खड़ा कर देने की कोशिश की। एक मानक व्यवस्था और लोकमंगल स्थापित करने का उनका प्रयत्न सराहनीय है। यह बात अलग है कि, आज के हिसाब से, उस मानक व्यवस्था की अपनी सीमा हो सकती है और जरूरी नहीं कि यह सीमा तुलसी की ही सीमा हो, यह उनके समय यानी उनके कालखण्ड की सीमा भी हो सकती है। माँग कै खइबव मजीद पे सोइबव, लेवै को एक न देवय को दोऊ लिखना या फिर खेती न किसान को, भिखारी को न भीख बलि, बनिक को बनिज न चाकर को चाकरी। जीवका विहीन लोग सीद्यमान सोचबस, कहैं एक एकन से कहाँ जाइ का करी। बेरोजगारी और बेकारी के उस दौर में, यह हिन्दी कविता की ऐसी लोकधर्मिता है जो उर्दू के प्रतिष्ठित शायर गालिब की याद दिलाती है – गम अगर्चे जाँगुसिल है पे बचे कहाँ के दिल है, गम-ए-इश्क गर न होता, गम-ए-रोज़गार होता। हिन्दी साहित्य ने सदैव समाज के लिए सोचा है, बराबरी के लिए सार्थक रचनाएँ की हैं, यहाँ तुलसी की राजनीतिक चेतना दृष्टव्य है, यथा – जासु राजु प्रिय प्रजा दुखारी, सो नृप अवस नरक अधिकारी। बराबरी का प्रजातन्त्र और लोक में इसकी जड़ों को गहराई तक ले जाने की लालसा ही हिन्दी साहित्य को महान बनाती है।

इस कड़ी में अगला नाम नागार्जुन (वैद्यनाथ मिश्र) का है। नागार्जुन एक ऐसे कवि हैं जिन्होंने लोकधर्मिता की निवासस्थली पर ही टिप्पणी की है – "जहाँ न भरता पेट, देश वह कैसा भी हो, महानरक है"। या कई दिनों तक चूल्हा रोया, चक्की रही उदास। कई दिनों तक कानी कुतिया सोई उसके पास अथवा यहाँ कुतिया तो जीव है, इसलिए उसका सोना लाजिमी है लेकिन जो लाजिमी नहीं है वह है लोकजगत में चूल्हे का रोना और चक्की का उदास होना। जनता का अभावजनित दुख, घर में रोशनी तक न होने को काव्यात्मक भाषा में कह ले जाना कि जब घर में बत्ती या दिया ही नहीं जला तो पतंगे कहाँ से आएँगे और जब पतंगे ही नहीं आए तो छिपकलियों का गश्त लगाना स्वाभाविक है क्योंकि उनको तो अपना आहार ही नहीं मिल रहा। एक अकाल से सिर्फ मानवजाति ही प्रभावित नहीं होती, पशु-पक्षी भी प्रभावित होते हैं। यह और इतना तो हम सभी जानते हैं लेकिन यह हिन्दी कविता की गहन लोकधर्मी परम्परा ही है जहाँ कवि ने महज आठ पंक्तियों वाली इस कविता

में प्रारम्भ की चार पंक्तियों में घर के किसी सदस्य को आने तक नहीं दिया है। प्रारम्भिक चार पंक्तियों में चूल्हा-चक्की और छिपकलियाँ वगैरह ही हैं। इसके बाद ही कविता में मनुष्य आया है। और जब कविता खत्म होती है तो कौए से ही खत्म होती है। नागार्जुन ने यहाँ भिखमंगों का चित्र नहीं खींचा है, बल्कि निम्न-मध्यमवर्गीय परिवार का यथार्थबोध दिखाया है। कविता की जनशून्य पंक्तियाँ जन की पीड़ा और लोक के अभाव को ही दर्शा रही हैं।

पढ़-लिखकर हम क्या करते हैं, उस पर कवि पंकज सिंह का शीतल आक्रोश देखिए – ऐसे ही दुनिया में सभी पढ़े-लिखों को बस अपनी-अपनी फिक्र है, बाकी फुर्सत में रही-सही नेकियाँ हैं, कला है, देश है, समाज का भी जिक्र है। और फिर जो आज का लोक है, उसकी जो विसंगतियाँ हैं, उस पर धर्मवीर भारती क्या कहते हैं, ठण्ढा लोहा में, कि, कितने कमरों में बन्द हिमालय रोते हैं, मेजों से लगकर सो जाते कितने पठार।

साहित्य में विभिन्न विधाओं में वर्णित लोकधर्मिता लोक की समस्याओं का सन्धान करती है, उनका निराकरण करने की दिशा में आगे बढ़ती है। हिन्दी साहित्य की लोकधर्मी परम्परा के अनुकरण में सर्वेश्वर दयाल सक्सेना की ये पंक्तियाँ देखी जा सकती हैं, यथा- गोली खाकर, एक के मुँह से निकला राम/ दूसरे के मुँह से निकला माओ/ पर तीसरे के मुँह से निकला आलू/ पोस्टमार्टम की रिपोर्ट है/ पहले दो के पेट भरे थे। इसी तरह मुक्तिबोध का भी अपना लोक-बोध है – जो है उससे बेहतर चाहिए, पूरी दुनिया को साफ करने के लिए एक मेहतर चाहिए, और वह मैं हो नहीं पाता। जब लोक सुखी नहीं रह पाता तो कवि उसके ढाँचागत, व्यवस्थागत, विचारगत और व्यतिक्रमगत कारणों को पहचानना चाहता है। सर्वेश्वर दयाल सक्सेना लिखते हैं – लोकतन्त्र को लाठी में जूते की तरह लटकाए, चले जा रहे हैं सभी, सीना फुलाए। हिन्दी साहित्य में हिन्दी गजल की लोकधर्मिता देखनी है तो दुष्यन्त कुमार और अदम गोण्डवी के यहाँ बिल्कुल साफ-साफ देखी जा सकती है। दुष्यन्त कुमार लिखते हैं – कहाँ तो तय था चरागाँ, हरेक घर के लिए, कहाँ चराग मयस्सर नहीं शहर के लिए। न हो कमीज तो पाँवों से पेट ढक लेंगे, ये लोग कितने मुनासिब हैं इस सफर के लिए। तेरा निजाम है सिल दे जबान शायर की. ये एहतियात जरूरी है इस बहर के लिए। इस प्रकार अदम गोण्डवी कहते हैं – सौ में सत्तर आदमी फिलहाल जब नाशाद है, दिल पे रखके हाथ कहिए देश क्या आजाद है। कोठियों से मुल्क के मेयार को मत आँकिए, असली हिन्दुस्तान तो फुटपाथ पर आबाद है। या फिर तुम्हारी फाइलों में गाँव का मौसम गुलाबी है, मगर ये आँकड़े झूठे हैं, ये दावा किताबी है। या फिर जो उलझकर रह गयी है फाइलों के जाल में, गाँव तक वो रोशनी आएगी कितने साल में। बूढ़ा बरगद साक्षी है किस तरह से गुम हुई, रामसुध की झोपड़ी सरपंच की चौपाल में।

सन् 2005 में प्रकाशित 'टालस्टाय और साइकिल' कविता संग्रह की पहली ही कविता में कवि केदारनाथ सिंह उन लोगों की तरफ से बोल रहे हैं, जो काम पर चले गए हैं। कवि को लगता है कि वह उस चींटी की तरफ से बोल रहा है जो नागासाकी में अकेली बच गयी थी। केदारनाथ सिंह की लोकधर्मिता बिना किसी शोर या हो-हल्ले के, बिना किसी नारेबाजी के मजूरों और मेहनतकश लोगों

के पक्ष में मजबूती से खड़ी होती है। कवि अपने लोक से भागकर किसी समस्या का समाधान नहीं करना चाहता, यहाँ उनकी पंक्तियाँ दृष्टव्य है – यथा जाऊँगा कहाँ, रहूँगा यहीं, किसी किवाड़ पर, हाथ के निशान की तरह, पड़ा रहूँगा। किसी पुराने ताखे या सन्दूक की गन्ध में छिपा रहूँगा। दबा रहूँगा किसी रजिस्टर में अपने स्थायी पते के अक्षरों के नीचे। या बन सका तो ऊँची ढलानों पर नमक ढोते खच्चरों की घण्टी बन जाऊँगा या फिर माझी के पुल की कोई कील।

केदारनाथ सिंह की कविताओं में गाँव और गाँव के लोग कई रूपों में आते हैं। नदी, नाले, पेड़, पौधे, जन-परिजन, खेत-खलिहान, पशु-पक्षी, सड़क और पुल, गुलमोहर, वंशी मल्लाह, सनझू हज्जाम, जगरनाथ हलवाहा, और नूर मियाँ। यानी पूरा लोक और पूरी लोकधर्मिता। कवि नूर मियाँ को जिस तरह याद करता है, उसे देखिए-

तुम्हें नूर मियाँ की याद है केदारनाथ सिंह!, गेहुँए नूर मियाँ, ठिगने नूर मियाँ, रामगढ़ बाजार से सुरमा बेचकर, सबसे अन्त में लौटने वाले नूर मियाँ, क्या तुम्हें कुछ भी याद है केदारनाथ सिंह! तुम्हें याद है मदरसा, इमली का पेड़, इमामबाड़ा, तुम्हें याद है शुरू से अखिरी तक उन्नीस का पहाड़ा....क्या तुम अपनी भूली हुई स्लेट पर, जोड़-घटाकर यह निकाल सकते हो कि एक दिन अचानक तुम्हारी बस्ती को छोड़कर, क्यों चले गए थे नूर मियाँ, क्या तुम्हें पता है कि इस समय वे कहाँ हैं, ढाका या मुलतान में, क्या तुम बता सकते हो हर साल कितने पत्ते गिरते हैं पाकिस्तान में, तुम चुप क्यों हो केदारनाथ सिंह, क्या तुम्हारा गणित कमज़ोर है!

हिन्दी साहित्य में लोक, लोकधर्म और लोक-परम्परा से गहरे सरोकार रखने वाली केदारनाथ सिंह की एक और कविता देखिए-

मेरी भाषा के लोग, मेरी सड़क के लोग हैं, सड़क के लोग सारी दुनिया के लोग हैं, पिछली रात मैंने एक सपना देखा, कि दुनिया के सारे लोग एक बस में बैठे हैं, और हिन्दी बोल रहे हैं, फिर वह पीली-सी बस हो गयी गायब, और मेरे पास रह गयी सिर्फ मेरी हिन्दी, जो हमेशा बच जाती है मेरे पास, हर मुश्किल में। हम सब जानते हैं कि हिन्दी में समझाने के बाद श्रोता के पास न समझने का विकल्प बचता ही नहीं है, वो कहते हैं न कि समझ में आया या फिर शुद्ध हिन्दी में समझाऊँ? हिन्दी साहित्य की लोकधर्मी परम्परा हमें अपने जड़ों से जुड़े रहने और कुरीतियों के शमन हेतु धारदार बनाती है।

**महेन्द्र प्रताप**
**डीईओ**

# आत्म विश्वास

मनुष्य में आत्म विश्वास का होना बहुत आवश्यक है। आत्म विश्वास ही वह शक्ति है जिसके आधार पर मनुष्य कठिन से कठिन कार्य को सम्पन्न करके सफलता प्राप्त कर सकता है। परमात्मा ने प्रत्येक मनुष्य को कोई न कोई विशेषता प्रदान की है। जरूरत है उस विशेषता को पहचानने की और जाग्रत करने की। आत्म विश्वास मनुष्य के भीतर ही होता है। आत्म विश्वास वह शक्ति है जो मनुष्य को ऊर्जा एवं धैर्य प्रदान करता है जिससे विकट परिस्थिति में भी आगे बढ़ा जा सकता है और निर्धारित उद्देश्यों को प्राप्त करके सफलता हासिल की जा सकती है। आत्म विश्वास से मनष्य की संकल्प शक्ति बढ़ती है और बड़े-बड़े से कार्य सहजता से किए जा सकते हैं।

प्रायः देखने में आता है कि संसार के विभिन्न तरह के प्राणी अपने जीवन में आत्म विश्वास यानि स्वयं पर भरोसा रखकर असम्भव प्रतीत होने वाले कार्य को भी सम्भव कर लेते है। सभी जानते है कि शहद मधुमक्खियों के छत्ते से प्राप्त होता है लेकिन मधु मक्खियों अपने आत्म विश्वास और कठिन परिश्रम से इसे कण-कण करके इकट्ठा करती है। ऐसे ही अनेको उदाहरण देखने में आते हैं विभिन्न प्राणी अपने जीवन में मुश्किलों के बावजूद भी संघर्ष करते हुए आगे बढ़ते हैं। छोटी-छोटी

चिड़िया एक-एक तिनका इकट्ठा करके अपना घोसला बनाती है यह कार्य सरल नहीं होता बल्कि उनके आत्म विश्वास और कठिन परिश्रम को दर्शाता है।

मनुष्य के लिए यह महत्वपूर्ण है कि असफलता होने पर भी आत्म विश्वास को बनाए रखने और सफलता प्राप्त करने के लिए अग्रसर रहना चाहिए विषम परिस्थिति भी अपने लक्ष्यों को नहीं छोड़ना चाहिए यह बात ध्यान रखनी चाहिए कि जीवन में क्या उचित है या अनुचित है। आत्म विश्वास के साथ इसकी समझ हमेशा रखनी चाहिए और अच्छे कार्य करने की ओर अग्रसर होना चाहिए। पथ भ्रष्ट होने से बचना चाहिए और आत्म विश्वास की शक्ति से मनुष्य को अच्छे से अच्छे कार्य करने का प्रयास करना चाहिए इतिहास गवाह है हाल ही में चन्द्र यान की कामयाबी हमारे वैज्ञानिकों के अपार मेहनत और आत्म विश्वास का ही परिणाम है।

**विकास किशोर सक्सेना**
**निजी सचिव**

# देवभूमि ऋषिकेश

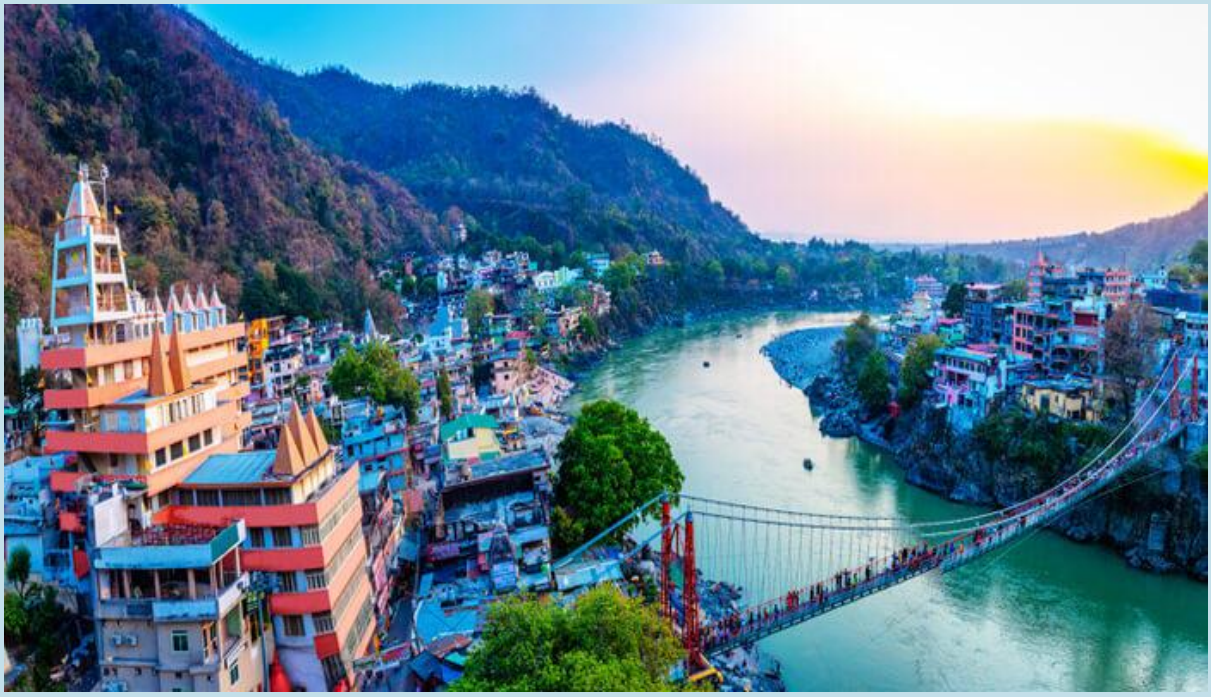

ऋषिकेश भारतीय राज्य उत्तराखण्ड के देहरादून ज़िले में देहरादून के निकट एक नगर है। यह गंगा नदी के दाहिने किनारे पर स्थित है और हिन्दुओं हेतु एक तीर्थस्थल है, जहाँ प्राचीन सन्त उच्च ज्ञानान्वेषण में यहाँ ध्यान करते थे। इसे "गढ़वाल हिमालय का प्रवेश द्वार" और "विश्व की योगनगरी" के रूप में जाना जाता है। ऋषिकेश एक शाकाहारी और मद्यमुक्त नगर है। सितम्बर 2015 में, भारतीय पर्यटन मन्त्री महेश शर्मा ने ऋषिकेश और हरिद्वार को पहले "जुड़वाँ राष्ट्रीय विरासत नगर" की मान्यता का दर्ज़ा दिया था । ऋषिकेश की कुल जनसंख्या 322,825 है, जिसमें नगर और इसके निकट के 93 ग्राम अन्तर्गत हैं।

**शब्दोत्पत्ती -**हृषीकेश नगर का नाम भगवान विष्णु के नाम से लिया गया है, जो हृषीक अर्थात् 'इन्द्रियों' और ईश अर्थात् 'ईश्वर' की समास से बना है, और 'इन्द्रियों के ईश्वर' का संयुक्तार्थ देता है। यह नाम रैभ्य ऋषि को, उनके तपस्या के फलस्वरूप, भगवान विष्णु की एक साक्षात दर्शन का स्मरण कराता है। ऋषि रैभ्य ने अपनी इन्द्रियों पर विजय प्राप्त कर इन्द्रियों के विजेता भगवान विष्णु को प्राप्त किया। स्कन्द पुराण में, इस क्षेत्र को कुब्जाम्रक के रूप में जाना जाता है, क्योंकि भगवान विष्णु एक आम्र वृक्ष के नीचे प्रकट हुए थे।

## दर्शनिया स्थल

### लक्ष्मण झूला

गंगा नदी के एक किनार को दूसर किनार से जोड़ता यह झूला नगर की विशिष्ट की पहचान है। इसे विकतमसंवत 1996 में बनवाया गया था। कहा जाता है कि गंगा नदी को पार करने के लिए लक्ष्मण

ने इस स्थान पर जूट का झूला बनवाया था। झूले के बीच में पहुँचने पर वह हिलता हुआ प्रतीत होता है। 450 फीट लम्बे इस झूले के समीप ही लक्ष्मण और रघुनाथ मन्दिर हैं। झूले पर खड़े होकर आसपास के खूबसूरत नजारों का आनन्द लिया जा सकता है। लक्ष्मण झूला के समान राम झूला भी नजदीक ही स्थित है। यह झूला शिवानन्द और स्वर्ग आश्रम के बीच बना है। इसलिए इसे शिवानन्द झूला के नाम से भी जाना जाता है। ऋषिकेश मैं गंगाजी के किनारे की रेत बड़ी ही नर्म और मुलायम है, इस पर बैठने से यह माँ की गोद जैसी स्नेहमयी और ममतापूर्ण लगती है, यहाँ बैठकर दर्शन करने मात्र से हृदय मैं असीम शान्ति और रामत्व का उदय होने लगता है।..

**त्रिवेणी घाट**

ऋषिकेश में स्नान करने का यह प्रमुख घाट है जहाँ प्रात: काल में अनेक श्रद्धालु पवित्र गंगा नदी में डुबकी लगाते हैं। कहा जाता है कि इस स्थान पर हिन्दू धर्म की तीन प्रमुख नदियों गंगा यमुना और सरस्वती का संगम होता है। इसी स्थान से गंगा नदी दायीं ओर मुड़ जाती है। गोधूलि वेला में यहाँ की नियमित पवित्र आरती का दृश्य अत्यन्त आकर्षक होता है। शाम को त्रिवेणी घाट पर आरती का दृश्य एक अलग आकर्षक एवं असीम शांति दायक होता है ।यहां पर मायाकुंड में एक तारा मंदिर भी है। जिसके अंदर एक भव्य 6500 किलो का घंटा स्थित है। इसे देखने दूर-दूर से लोग आते है।

**परमार्थ निकेतन घाट**

स्वामी विशुद्धानन्द द्वारा स्थापित यह आश्रम ऋषिकेश का सबसे प्राचीन आश्रम है। स्वामी जी को 'काली कमली वाले' नाम से भी जाना जाता था। इस स्थान पर बहुत से सुन्दर मन्दिर बने हुए हैं। यहाँ खाने पीने के अनेक रस्तरां हैं जहाँ केवल शाकाहारी भोजन ही परोसा जाता है। आश्रम की आसपास हस्तशिल्प के सामान की बहुत सी दुकानें हैं।

**भरत मन्दिर**

यह ऋषिकेश का सबसे प्राचीन मन्दिर है जिसे 12 शताब्दी में आदि गुरु शंकराचार्य ने बनवाया था। भगवान राम के छोटे भाई भरत को समर्पित यह मन्दिर त्रिवेणी घाट के निकट ओल्ड टाउन में स्थित है। मन्दिर का मूल रूप 1398 में तैमूर आक्रमण के दौरान क्षतिग्रस्त कर दिया गया था। हालाँकि मन्दिर की बहुत सी महत्वपूर्ण चीजों को उस हमले के बाद आज तक संरक्षित रखा गया है।

मन्दिर के अन्दरूनी गर्भगृह में भगवान विष्णु की प्रतिमा एकल शालीग्राम पत्थर पर उकेरी गई है। आदि गुरु शंकराचार्य द्वारा रखा गया श्रीयन्त्र भी यहाँ देखा जा सकता है।

**कैलाश निकेतन मन्दिर**

लक्ष्मण झूले को पार करते ही कैलाश निकेतन मन्दिर है। 12 खण्डों में बना यह विशाल मंदिर ऋषिकेश के अन्य मन्दिरों से भिन्न है। इस मंदिर में सभी देवी देवताओं की मूर्तियाँ स्थापित हैं।

**गीता भवन**

राम झूला पार करते ही गीता भवन है जिसे विकतमसंवत 2007 में श्री जयदयाल गोयन्दकाजी के द्वारा बनवाया गया था। यह अपनी दर्शनीय दीवारों के लिए प्रसिद्ध है। यहां रामायण और महाभारत के चित्रों से सजी दीवारें इस स्थान को आकर्षण बनाती हैं। यहां एक आयुर्वेदिक डिस्पेन्सरी और गीताप्रेस गोरखपुर की एक शाखा भी है। प्रवचन और कीर्तन मन्दिर की नियमित क्रियाएँ हैं। शाम को यहां भक्ति संगीत की आनन्द लिया जा सकता है। तीर्थयात्रियों के ठहरने के लिए यहाँ सैकड़ों कमरे हैं।

**एम्स/AIIMS**

यह हिन्दी-अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान अंग्रेजी- AIIMS का संक्षिप्त नाम है, भारत का दिल्ली के बाद यह देश का सबसे बड़ा चिकित्सालय है, अस्पताल परिसर 400 मीटर के दायरे में फैला है देखने योग्य भव्य इमारत है, इसके कई भाग हैं- ट्रॉमा सेण्टर, और अपातकालीन विभाग आदि

धार्मिक दर्शनीय स्थलों के साथ साथ ऋषिकेश का एक आकर्षण और है, वह है रिवर राफ्टिंग। गंगा की लहरों में झूलते हुए , पानी से खेलते हुए अपनी कश्ती से नदी को पार करने का उत्साह अलग ही आनद देता है। प्रकृति प्रेमियों के लिए ऋषिकेश स्वर्ग है। यहाँ का वातावरण बहुत ही सरल, साफ़ व शान्ति देने वाला है। बहुत से तीर्थ स्थान जैसे की देवप्रयाग, रुद्रप्रयाग, गंगोत्री , बदरीनाथ तथा नीलकंठ महादेव जाने का रास्ता ऋषिकेश से हो कर ही जाता है।

एक आग्रह –

गंगा को साफ रखने में अपना सहयोग दें और ऐसा कोई कार्य न करे जिस से हमारे धर्म की व गंगा की पवित्रता भंग हो। हर हर गंगे !! जय माँ गंगे !!

**रेनू बलूनी**
**निजी सचिव**

# भारत मंडपम

इन्टरनैशनल एग्जीवेशन कम कन्वैंशन सेंटर की इमारत को भारत मंडपम का नाम दिया गया है। भारत मंडपम एक अंतरराष्ट्रीय प्रदर्शनी-सह-सम्मेलन केन्द्र है जिसे एक राष्ट्रीय परियोजना के तहत विकसित किया गया है। इसे वैश्विक व्यापार सम्मेलन, व्यापार मेले और सांस्कृतिक कार्यक्रमों के आयोजन के लिए तैयार किया गया है। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने 26 जुलाई, 2023 को इस कॉम्प्लेक्स का उद्घाटन किया था। भारत मंडपम, नई दिल्ली के प्रगति मैदान में स्थित है। भारत मंडपम का नाम भगवान बसवेश्वेर के अनुभव मंडपम के विचार से लिया गया है। भारत मंडपम का डिजाइन शंख से प्रेरित है। इसकी दीवारों पर भारत की पारंपरिक कला और संस्कृति को दर्शाया गया है। इसका बहुउद्देशीय हॉल और प्लेनेरी हॉल सात हजार लोगों को समायोजिक कर सकता है। जो इसे क्षमता के मामले में ऑस्ट्रेलिया के प्रसिद्ध सिडनी ओपेरा हाउस से बड़ा बनाता है। इसके एम्फीथिएटर में 3 हजार व्यक्तियों के बैठने की व्यवस्था है, 500 लोगों के लिए एक सेमिनार हॉल, 100 लोगों के लिए कई कार्यशाला हॉल, एक प्रदर्शनी हॉल और कई अन्य सुविधाएं शामिल है।

भारत मंडपम के वास्तुकार संजय सिंह है जो आरकाप एसोसिऐट प्राइवेट लि. के डायरेक्टर हैं। यह सन 2023 में 2700 करोड़ रूपये की लागत से बनकर तैयार हुआ। इसकी सजावट में भारत के हर राज्य के आर्टवर्क का इस्तेमाल किया गया है। भारत मंडपम में अष्टधातु से बनी नटराज की मूर्ति स्थापित की गई है जो कि 27 फीट ऊंची और इसका वज़न 18 टन है। भारत मंडपम का डिजाइन हसीब हुसैन और उनकी टीम द्वारा लिया गया है। इसे आधुनिक वास्तुकला के मानकों के अनुसार डिजाइन किया गया है जिसमें स्थायी विकास और पर्यावरणीय अनुकूलता का भी ध्यान रखा गया है। इसमें ऊर्जा की बचत करने वाली तकनीक और सुरक्षा के उच्च मानकों का प्रयोग किया गया है। इसी कारण इसे ग्रीन बिल्डिंग का सर्टिफिकेट प्राप्त है। इसका निर्माण सीपीडब्ल्यूडी द्वारा किया गया है जो निर्माण और रखरखाव में विशेषज्ञता रखता है।भारत मंडपम में सबसे पहले भारत की अध्यक्षता में 9 सितम्बर से 10 सितम्बर, 2023 में जी-20 शिखर सम्मेलन का आयोजन किया गया। इसमें देश और दुनिया के कई बड़े-बड़े कार्यक्रमों को किया जा सकता है। भारत मंडपम इंडियन ट्रेड प्रमोशन ऑगेनाइजेशन के तहत आता है। इसके द्वारा इसे बुक कराया जा सकता है।

**वन्दना वर्मा**
**निजी सचिव**

# स्वच्छता ही सेवा अभियान - 'स्वच्छता' ही स्वस्थ और शान्तिपूर्ण जीवन का मूल मंत्र

महात्मा गांधी का कथन है. स्वच्छता, राजनीतिक स्वतंत्रता से अधिक महत्वपूर्ण है। यह कथन समाज में स्वच्छता के महत्व को रेखांकित करता है। उनके इसी कथन को मूर्त रूप देने के लिए माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने 15 अगस्त, 2014 को लाल किले की प्राचीर से राष्ट्र को संबोधित करते हुए कहा था कि "हमें गंदगी और खुले में शौच के खिलाफ लड़ाई लड़नी है, हमें पुरानी आदतों को बदलना है और महात्मा गांधी की 150वीं जयंती के वर्ष 2019 तक स्वच्छ भारत का लक्ष्य प्राप्त करना है।" जिसके तहत 15 सितम्बर से 2 अक्तूबर (गांधी जयंती) तक देश भर में एक विशेष स्वच्छता अभियान का आगाज किया गया, जिसे पीएम मोदी ने 'स्वच्छता ही सेवा' (क्लीनीनेस इज सर्विस) नाम दिया है। कैंपेन को प्रोत्साहन देने हेतु महामहिम राष्ट्रपति श्री रामनाथ कोविंद 15 सितम्बर को उत्तर प्रदेश से अभियान का शुभारंभ किया। इस दौरान राष्ट्रपति ने नागरिकों से आग्रह किया कि वे अपने परिवेश को स्वच्छ बनाए रखें।

स्वच्छता ही सेवा अभियान के अंतर्गत कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय, भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद से संबंधित संस्थानों, कृषि विश्व विद्यालयों और कृषि विज्ञान केन्द्रों में भी इस अभियान के तहत जोर शोर से स्वच्छता कार्यक्रमों का आयोजन किया जा रहा है। 15 सितम्बर को प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के 'स्वच्छता ही सेवा' के उद्घोष के साथ इस अभियान की शुरूआत हुई। सुबह 09.30 बजे 10.30 बजे तक पीएम के संबोधन को अधिकारियों व कर्मचारियों ने अपने-अपने कार्यालयों में दूरदर्शन और नमो एप के माध्यम से सुना, तत्पश्चात् सभी ने अपने कार्यालय परिसर, शौचालयों, उद्यान व आसपास के इलाकों की साफ सफाई में श्रमदान दिया जो निरंतर जारी है।

साफ-सफाई एक अच्छी आदत है, स्वच्छ पर्यावरण और आदर्श जीवन शैली के लिए हर एक को यह आदत बनानी चाहिए। "स्वस्थ शरीर में स्वस्थ मानसिकता का विकास होता है" इसी के मद्देनजर देश में स्वच्छता की आवश्यकता को देखते हुए हमारे प्रधानमंत्री ने स्वच्छता अभियान शुरू किया। हमें ये समझना चाहिए कि ये केवल हमारे प्रधानमंत्री का कार्य नहीं है, बल्कि समाज में रहने वाले हर इंसान की जिम्मेदारी है। हम सब के स्वस्थ जीवन के लिए इस अभियान में हमें कंधे से कंधा मिलकर भाग लेना चाहिए। इसकी शुरूआत घरों, स्कूलों, कॉलेजों, समुदायों, कार्यालयों, संस्थानों से हो जिससे कि देश में व्यापक स्तर पर स्वच्छ भारत क्रांति हो। हमें खुद को, घर, अपने आसपास, समाज, समुदाय, शहर, उद्यान और पर्यावरण आदि को रोज स्वच्छ रखने की जरूरत है।

मैं सभी को बताना चाहूँगा कि मोतिहारी के घिवाढार गाँव में हीरा कुमार नाम के 10 वर्षीय बालक ने शौचालय के लिए स्वयं गड्ढे का निर्माण किया है। मजदूरी देने के लिए घर में पैसे नहीं थे, ऐसे इस

काम का जिम्मा स्वयं ने लिया। स्वच्छता के प्रति ये प्रतिबद्धता व प्रेरणा हीरा को अपने विद्यालय में स्वच्छता अभियान के माध्यम से मिली। ऐसे स्वचाग्राही ही माननीय प्रधानमंत्री जी के स्वच्छता अभियान के असली सिपाही है। हीरा से सीख लेकर हम सभी को स्वच्छता का ध्येय, महत्व तथा जरूरत को समझना चाहिए और इसे अपने दैनिक जीवन में लागू करना चाहिए। क्योंकि स्वच्छता ही स्वस्थ और शान्तिपूर्ण जीवन का मूल मंत्र है।

हमारे प्रधानमंत्री जी ने देश में स्वच्छता की जो मशाल जलाई है, उसे निरंतर आगे बढ़ाने के लिए सभी गांव, सभी शहरों तक स्वच्छता की अलख जगानी होगी। हमें स्वच्छता को रोज की दिनचर्या में शामिल करना है। जिससे स्वच्छ और स्वस्थ भारत का निर्माण हो। अब आवश्यकता है कि स्वच्छ भारत के हमारे इस संकल्प को सिद्धि तक लेकर जायें एवं एक न्यू इंडिया के निर्माण में भागीदार बने।

प्रधानमंत्री जी के स्वच्छता अभियान को प्रति वर्ष भारत सरकार के अधीनस्थ सभी कार्यालय 14 सितम्बर से 2 अक्तूबर तक इस अभियान को सुचारू रूप से चलाते आ रहे है, हमारा कार्यालय भी इस स्वच्छता ही सेवा अभियान के अंतर्गत प्रतिदिन नए-नए कार्यकलाप करके, कार्यकलापों की रिपोर्ट मंत्रालय को भेज दी जाती है।

**मेहरबान सिंह चौहान**
**वरिष्ठ लेखा अधिकारी**

# कविताएं

## एक पेड़ माँ के नाम

छोड़ो सारे जंग के काम,
लगाओ एक पेड़ माँ के नाम।

इससे जरूरी नहीं कोई काम
लगाओ एक पेड़ धरती माँ के नाम।

बचाना है अगर अपने प्राण
लगाओ एक पेड़ धरती माँ के नाम।

माँ का क्रोध झेलना नहीं है आसान
वर्तमान से भयंकर होगा वरना भविष्य का परिणाम,
लगाओ एक पेड़ धरती माँ के नाम।
होगा यही माँ का सच्चा सम्मान,

हे माँ का सब कुछ तेरे नाम।
लगाओ एक पेड़ धरती माँ के नाम।

कर्ज बहुत है मुझ पर तेरा कैसे इसे चुकाऊं।
पेड़ों की छाया के नीचे माँ तेरे पैर दबाऊं।

लेता हूँ प्रतीज्ञा तेरी मैं कुछ करके दिखलाऊं।
क्यों न मैं भी तेरे नाम का माँ एक पेड़ लगाऊं।।

**सुशील कुमार सिंह**
**आउटसोर्स कार्मिक**

# मेरा पहला प्यार

माँ, मेरा पहला प्यार, आँख खुली तो माँ को देखा
चलना सीखा माँ की ऊंगली पकड़कर
स्कूल जाने पर आँसू पौंछे माँ के पल्लू से
पढ़ाई न करने पर डाँट खाई माँ की
क्लास में अव्वल आने पर सबसे ज्यादा खुश
होते हुए देखा माँ को

नौकरी न लगने पर प्रोत्साहन देते हुए देखा माँ को
गिरकर संभलने पर ताकत बनते देखा माँ को
एक रोटी माँगने पर दो रोटी देते हुए देखा माँ को
अपने सपने हमारी आँखों में देखते हुए देखा माँ को
जिंदगी से हँसकर लड़ना सिखाया माँ ने
और माँ के लिए मैं क्या लिखूँ,
माँ की ही तो लिखावट हूँ मैं

जज्बात अलग है पर बात तो एक है
उसे माँ कहूँ या भगवान बात तो एक है

**सोनाली शर्मा**
**निजी सहायक**

# "कभी हम भी बहुत अमीर हुआ करते थे"

कभी हम भी बहुत अमीर हुआ करते थे
हमारे भी जहाज चला करते थे
हवा में भी और पानी में भी
दो दुर्घटना हुई सब कुछ खत्म हो गया

**पहली दुर्घटनाः**
जब कक्षा में, हवाई जहाज उड़ाया
टीचर के सिर से टकराया, स्कूल से निकालने की
नौबत आ गई और जहाज बनाना और उड़ाना सब छूट गया

**दूसरी दुर्घटनाः-**
बारिश के मौसम में, माँ ने अठन्नी दी,
चाय के लिए दूध लाना था कोई मेहमान आया था
हमने अठन्नी गली के नाली में तैरते अपने जहाज में बिठा दी
तैरते जहाज के साथ हम ध्यान से चल रहे थे
ठसक के साथ, खुशी खुशी अचानक तेज बहाव आया
और जहाज डूब गया, साथ में अठन्नी भी डूब गई,
ढूँढने से भी न मिली
मेहमान बिना चाय पिए चले गए

फिर जमकर कुटाई हुई। घंटे भर मुर्गा, बनाया गया
और हमारा पानी में जहाज तैराना भी बंद हो गया
आज जब प्लेन और क्रूज के सफर की बातें चलती है,
तो उन दिनों की याद दिलाती है, वो भी क्या जमाना था
और आज के जमाने में मेरे बच्चों ने 15 हजार का मोबाइल
गुमाया तो माँ बोली कोई बात नहीं पापा दूसरा दिला देंगे।
हमें अठन्नी पर मिली सज़ा याद आ गई
फिर भी आलम है कि आज भी हमारे सिर
माँ-बाप के चरणों में श्रद्धा से झुकते हैं
और हमारे बच्चे यार पापा, यार मम्मी कहकर बातें करते हैं।

हम प्रगतिशील से प्रगतिवान हो गए हैं,
बचपन में पैसा जरूर कम था, पर उस बचपन में दम था।
हमारे बचपन में कपड़े तीन टाइप के होते थे,
स्कूल का, घर का और खास मौके का।
अब तो कैजुअल, फार्मल, नार्मल, स्लीप वियर, स्पोर्ट वियर, पार्टी वियर,
स्विमिंग, जोगिंग, संगीत ड्रेस आदि

जिंदगी आसान बनाने चले ये पर वह कपड़ों की तरह कम्पलीकेटेड
बचपन में पैसा जरूर कम था पर उस बचपन में दम था।
हाथ में महँगे से महँगा मोबाइल है, परन्तु बचपन वाली वो स्माइल गायब है।
न अमूल, न वाडीलाल, न नेचुरल था, पर घर पर जमी आइसक्रीम का
मजा कुछ और ही था।

अपनी-अपनी बाइक और कारों में घूम रहे हैं हम
पर किराए की उस साइकिल का मजा ही कुछ और था
बचपन में पैसा जरूर कम था, पर यारों उस बचपन में दम था।

**मेहरबान सिंह चौहान**
**वरिष्ठ लेखा अधिकारी**

# बंधन तोड़ कर देखो

ये बंधन तोड़ कर देखो कितनी राहें बुलाती हैं,
अगर धक्का नहीं दोगे झूले भी ना झुलाती है।

अगर बच्चा नहीं रोए तो ममता दिख नहीं पाती
तभी तो लोरियां गा गा के माँ उनको सुलाती है।

हार कर जिंदगी में जो कभी टूटा नहीं करते,
वक्त आने पे उनके सीनों को मंजिल फुलती है।

दर्द दीवार दिल की तोड़ जब नैनो से रिश्ता है,
बोझ दिल का घटाने को ही ये आँखें रूलाती है।

जो भी ठहरा नहीं करते सदा कुछ करते रहते हैं,
उन्हीं को याद रख मधुकर ये पुश्तें ना भुलाती हैं।

**वन्दना वर्मा**
**निजी सचिव**

# दिल को छू लेने वाली बात

ना चादर बड़ी कीजिए
ना ख्वाहिशें दफन कीजिए
चार दिन की जिन्दगी है
बस चैन से बसर कीजिए।।

न परेशान किसी को कीजिए
न हैरान किसी को कीजिए
कोई  लाख गलत भी बोले
बस मुस्कुरा कर छोड़ दीजिए।।

न रूठा किसी से कीजिए
न झूठा वादा किसी से कीजिए
कुछ फुसरत के पल निकालिए
कभी खुद से भी मिला कीजिए।।

**राजेन्द्र सिंह**
**आउटसोर्स कार्मिक**

# कोशिश होनी चाहिए

मनुष्य के जीवन को सार्थक बनाने की कोशिश होनी चाहिए

कर्मों को बेहतरी से करने की कोशिश होनी चाहिए।

पल-पल क्षण-क्षण को सवांरने की कोशिश होनी चाहिए

सफलता हो या असफलता हो, आगे बढ़ने की कोशिश होनी चाहिए।

समस्याओं या कठिनाईयां हो, हिम्मत रखने की कोशिश होनी चाहिए।

फल न मिले तो भी तरू को सींचने की कोशिश होनी चाहिए।

मंजिल न मिले किनारा न मिले तो भी आगे बढ़ने की कोशिश होनी चाहिए।

डर को छोड़कर होसला रखने की कोशिश होनी चाहिए।

पथ-पथ कठिनाईयों हो तो भी जीवन की श्रेष्ठा की पहचाने की कोशिश होनी चाहिए।

फूल न खिले, तो भी नए पादप लगने की कोशिश होनी चाहिए।

उंमग हो या निराशा, सुख हो या दुःख दोनों को स्वीकार करने की कोशिश होनी चाहिए।

कल आज कल से एक नई पहचान बनाने की कोशिश होनी चाहिए।

बुराई को अच्छाई से जीतने की कोशिश होनी चाहिए

भलाई कर जीवन में सुकुन पाने की कोशिश होनी चाहिए।

**विकास किशोर सक्सेना**
**निजी सचिव**

# राजभाषा गतिविधियां

## क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालय, गाजियाबाद द्वारा राजभाषा संबंधी निरीक्षण

क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालय, गाजियाबाद से डॉ. छबिल कुमार मेहेर, उप निदेशक (कार्यान्वयन) एवं श्री अजय कुमार चौधरी, सहायक निदेशक (कार्यान्वयन) द्वारा दिनांक 12.3.2024 को राजभाषा नीति का कार्यान्वयन तथा राजभाषा के प्रगामी प्रयोग की प्रगति का निरीक्षण किया गया।

सचिव, महोदया की उपस्थिति में निरीक्षण प्रश्नावली पर चर्चा करते हुए उन्होंने बोर्ड में राजभाषा नीति के कार्यान्वयन पर मौखिक रूप से कुछ सुझाव दिए। निरीक्षण के दौरान उनके द्वारा बोर्ड में राजभाषा नीति के कार्यान्वयन पर कुछ सुझाव दिए तथा तेल उद्योग विकास बोर्ड में राजभाषा के प्रगामी प्रयोग की प्रगति का मूल्यांकन "बहुत अच्छा" दिया। सचिव महोदया द्वारा उन्हें भेंट स्वरूप एक पुस्तक एवं स्मृति चिन्ह प्रदान किया गया।

# कवि सम्मेलन (विश्व हिन्दी दिवस)

# हिन्दी पखवाडा

# हिन्दी कार्यशालाएं

"एआई (आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस) के माध्यम से हिन्दी कार्य में वृद्धि" दिनांक 22 मार्च, 2024
अतिथि वक्ता– श्री ललित भूषण, सदस्य सचिव, नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, गाजियाबाद

**" राजभाषा के विकास में गृह पत्रिकाओं की भूमिका " दिनांक 17 मई, 2024** अतिथि वक्ता– श्री योगेश अवस्थी, संपादक, भारतीय रेल (हिन्दी) एवं इंडियन रेलवेज (अंग्रेजी)

# हिन्दी कार्यशालाएं

**" राजभाषा हिन्दी का प्रचार-प्रसार " दिनांक 12 दिसम्बर, 2024**

अतिथि वक्ता– श्री विनय 'विनम्र', हिन्दी साहित्यकार एवं राष्ट्रीय कवि

" ई-ऑफिस में हिन्दी में कार्य कैसे करें" **दिनांक 23 सितम्बर, 2024**

अतिथि वक्ता– श्री अजय यादव, टीम लीडर (एनआईसी)

# अन्य गतिविधियां

## विश्व पर्यावरण दिवस

## अग्निशमन प्रशिक्षण

# पर्यावरण जारूकता रैली

# स्वच्छता अभियान

# स्वास्थ्य जांच शिविर

# रक्तदान शिविर

# “एक पेड़ मां के नाम”– अभियान

# जरा हंस लें

- बैंक में लिखा था

हिन्दी का प्रयोग करें.....
मैंने भी चैक पर लिख दिया चतुर मास शुक्लपक्ष चतुर्थी संवत 2074
अब बैंक वाले मेरा चैक नहीं ले रहें हैं
क्या करूं

- हमारे देश में अरबी बोली नहीं जाती, बल्कि खाई जाती है....
चीनी भी बोली नहीं जाती, सिर्फ खाई जाती है....
इसी तरह अंग्रेजी भी इतनी बोली नहीं जाती, जितनी पी जाती है....
और हिंदी बहुत ही शक्तिशाली भाषा है। क्योंकि जैसे ही कोई कहता है–
"हिंदी में समझाऊं क्या" तुरंत सारे समझ जाते हैं....
इसलिए हिंदी का सम्मान करें!

- गजब है ये दुनिया वाले भी,

मोबाइल खराब तो बच्चा जिम्मेदार
और बच्चा खराब तो मोबाइल जिम्मेदार

- कहते हैं, एक सामान्य मानव के शरीर में 70 प्रतिशत पानी होता है।
यानी कि अगर इसे भौगोलिक दृष्टि से देखे तो
मोटे लोग बाढ़ग्रस्त हैं और पतले लोग सूखाग्रस्त

- एक समय था जब रात के 12:00 बजे के बाद भूतों का राज होता था
- आज मोबाइल ने उनका यह रोजगार भी छीन लिया

- संता - बंता से निवेदन है स्वदेशी अपनाएं ।
बंता - ठीक है कल से oh my God की जगह हाय दइया चिल्लाएं

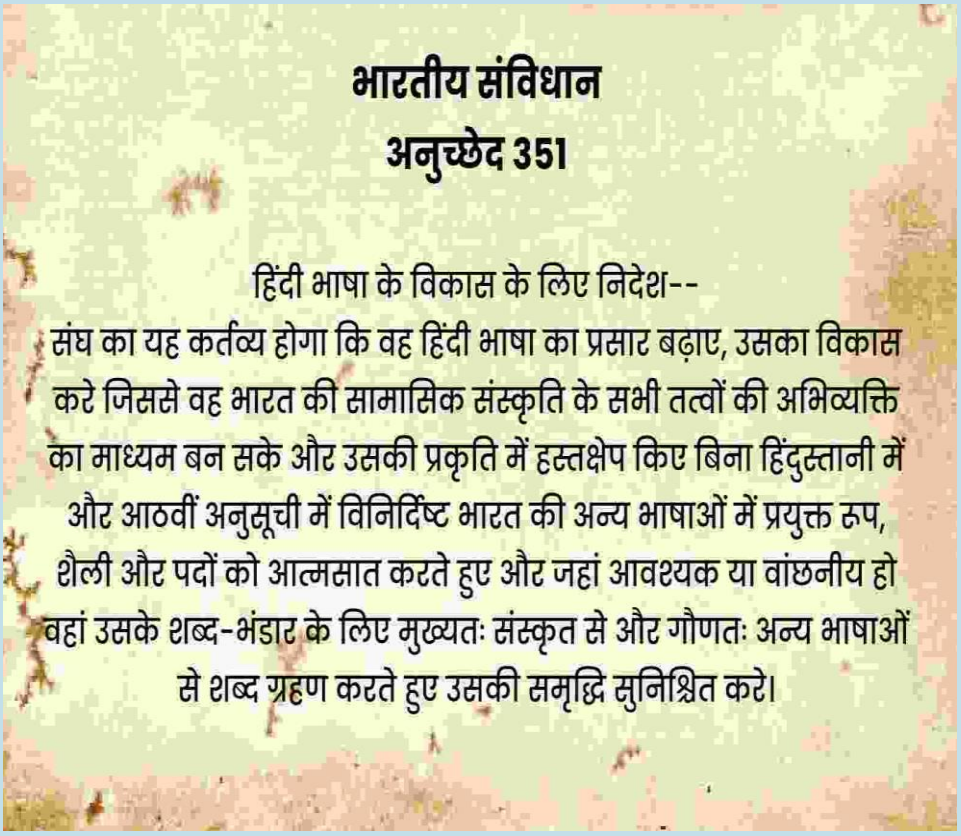
भारतीय संविधान
अनुच्छेद 351
हिंदी भाषा के विकास के लिए निदेश--
संघ का यह कर्तव्य होगा कि वह हिंदी भाषा का प्रसार बढ़ाए, उसका विकास करे जिससे वह भारत की सामासिक संस्कृति के सभी तत्वों की अभिव्यक्ति का माध्यम बन सके और उसकी प्रकृति में हस्तक्षेप किए बिना हिंदुस्तानी में और आठवीं अनुसूची में विनिर्दिष्ट भारत की अन्य भाषाओं में प्रयुक्त रूप, शैली और पदों को आत्मसात करते हुए और जहां आवश्यक या वांछनीय हो वहां उसके शब्द-भंडार के लिए मुख्यतः संस्कृत से और गौणतः अन्य भाषाओं से शब्द ग्रहण करते हुए उसकी समृद्धि सुनिश्चित करे।

राजभाषा हिंदी
प्रयास
प्रेरणा
प्रोत्साहन
प्रतिबद्धता
प्रेम
प्रमोशन
प्र
प्राइज़
प्रबंधन
प्रशिक्षण
प्रसार
प्रचार
प्रयोग